CELEBRATING 60 YEARS

साहित्योत्सव

9-14 मार्च 2015

साहित्य अकादेमी

दैनिक समाचार बुलेटिन

मंगलवार, 10 मार्च 2015

आज के कार्यक्रम

लेखक सम्मिलन

पुरस्कृत लेखक अपनी कृतियों और अपने रचनात्मक अनुभवों पर प्रकाश डालेंगे

पूर्वाह्न 10.30 बजे,
रवींद्र भवन परिसर

मीडिया के साथ पुरस्कृत लेखकों का संवाद : खुला सत्र

समन्वयक : दिनेश मिश्र

अपराह्न 2:30 बजे
रवींद्र भवन परिसर

संवत्सर व्याख्यान

आशीष नंदी

(प्रख्यात अंग्रेज़ी विद्वान)

क्या हम सांस्कृतिक विविधता की रक्षा करते हैं अथवा सांस्कृतिक विविधता हमारी रक्षा करती है--हमारे समय में संस्कृति की राजनीति विषय पर व्याख्यान

सायं 6.00 बजे,
रवींद्र भवन परिसर
कॉपरनिकस मार्ग, नई दिल्ली

साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2014 अर्पण समारोह सम्पन्न

भारतीय सृजन की विलक्षण विविधता ही हमारी विशेषता है

— केदारनाथ सिंह

नई दिल्ली, 9 मार्च 2015 । कमानी सभागार में आयोजित एक भव्य समारोह में आज साहित्य अकादेमी पुरस्कार 2014 अर्पण समारोह संपन्न हुआ। 24 भारतीय भाषाओं में प्रतिवर्ष दिए जाने वाले इस प्रतिष्ठित पुरस्कार में एक लाख रुपए का चेक और उत्कीर्ण ताम्र फलक प्रदान किए जाते हैं। पुरस्कृत लेखकों को पुरस्कार अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी द्वारा प्रदान किए गए। अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कंबार द्वारा पुष्पहार एवं पुष्पगुच्छ प्रदान किए गए। पुरस्कृत बाङ्ला लेखक उत्पल कुमार बासु और अंग्रेज़ी लेखक आदिल जसावाला अस्वस्थ होने के कारण नहीं आ सके। उनकी जगह यह पुरस्कार उनके परिजनों ने ग्रहण किए।

इस अवसर पर अपने वक्तव्य में साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि सभी पुरस्कृत लेखक हमारे लोक की आवाज़ हैं। साहित्य मौन को मुखर करता है और सन्नाटे को शब्द देता है। साहित्य ने गाँधी जी से पहले स्वदेशी और निज भाषा का नारा दिया था। आगे उन्होंने कहा कि सत्ता कोई भी हो, चाहे वह धर्म की सत्ता हो, राजसत्ता हो या विचारों की, वह जनविरोधी रूप अख़्तियार कर लेती है।

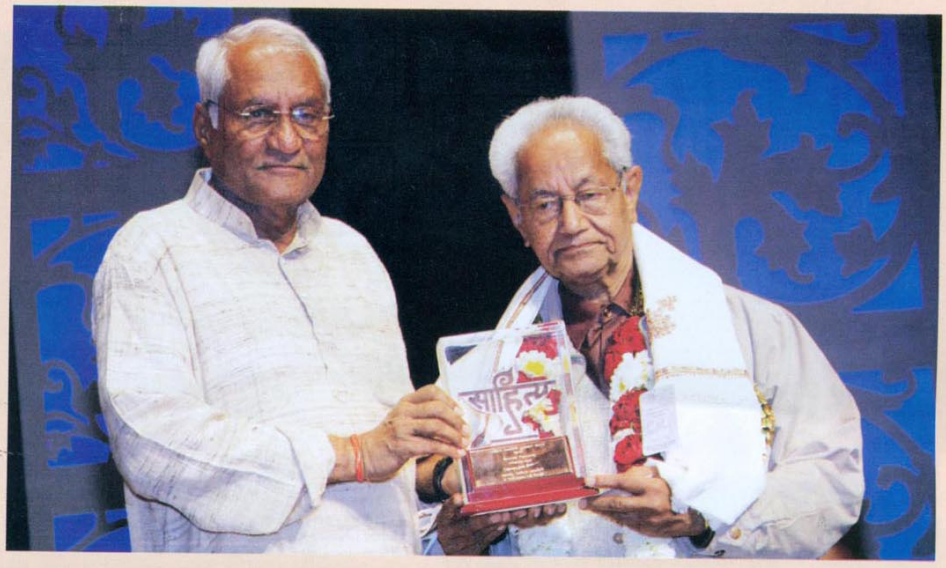

आज हम तकनीकी रूप से सक्षम तो हुए हैं, किंतु तकनीक भाव विरोधी होती है। भाव को साहित्य ही बचा सकता है। उन्होंने पूरे देश में मनाए जा रहे साहित्योत्सवों की भीड़ में साहित्य अकादेमी के इस गंभीर उत्सव की प्रशंसा करते हुए सभी पुरस्कृत लेखकों को बधाई दी।

पुरस्कार समारोह के अंत में मुख्य अतिथि प्रो. केदारनाथ सिंह ने सभी पुरस्कृत रचनाकारों को बधाई देते हुए कहा कि भारतीय सृजन की विलक्षण विविधता ही हमारी सबसे बड़ी विशेषता है। आगे उन्होंने कहा कि भारतीय साहित्य बीसवीं सदी के हैंगओवर से निकलकर नए रास्ते खोज रहा है और इस नए रास्ते का सूर्योदय पूर्वोत्तर से हो रहा है। उन्होंने अलक्षित भाषाओं और उनके साहित्य पर ध्यान दिए जाने की ज़रूरत पर बल दिया और साहित्य अकादेमी की प्रशंसा करते हुए कहा कि अकादेमी इन सबके विकास के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण काम कर रही है। अंत में अकादेमी के उपाध्यक्ष श्री चंद्रशेखर कंबार ने धन्यवाद ज्ञापन किया।

कार्यक्रम के प्रारंभ में अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने अकादेमी की उपलब्धियों की चर्चा करते हुए लेखकों और उपस्थित श्रोताओं का स्वागत किया।

भारतीय भाषाओं के संवाद का मंच है साहित्य अकादेमी -- रामदरश मिश्र

देश की प्रत्येक भाषा, अपने प्रदेश के साथ-साथ देश के जनजीवन को अंकित करती है और अनेकता में एकता के हमारे सूत्र को मज़बूती प्रदान करती है। उक्त उद्‌गार वरिष्ठ साहित्यकार डॉ. रामदरश मिश्र ने साहित्य अकादेमी के साहित्योत्सव 2015 की प्रदर्शनी का उद्‌घाटन करते हुए व्यक्त किए। उन्होंने कहा कि साहित्य अकादेमी सभी भारतीय भाषाओं के मिलन का मंच है। इन भाषाओं के संवाद से ही पाठकों का विस्तार होता है।

इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष प्रो. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने कहा कि साहित्य अकादेमी अपने कार्यक्रम जन-जन तक और छोटे-से-छोटे क़स्बे तक पहुँचाना चाहती है। पिछले वर्ष की हमारी उपलब्धियाँ इसी का प्रमाण है। हमने विगत वर्षों से लगभग दुगने कार्यक्रम इस वर्ष किए हैं।

इस अवसर पर साहित्य अकादेमी के सचिव डॉ. के. श्रीनिवासराव ने

साहित्य अकादेमी के पिछले वर्ष की उपलब्धियों के बारे में विस्तार से बताते हुए कहा कि अकादेमी ने पिछले वर्ष 465 कार्यक्रम किए, जिसमें 2360

लेखकों/विद्वानों ने भाग लिया। यानी प्रत्येक 19 घंटे में एक कार्यक्रम और 569 किताबें, यानी प्रत्येक 16 घंटे में एक पुस्तक प्रकाशित हुई। बर्ष के दौरान 186 पुस्तक प्रदर्शनियाँ आयोजित की गईं, जिसमें तीन अंतरराष्ट्रीय थीं। उन्होंने बताया कि साहित्य अकादेमी द्वारा कुछ नए कार्यक्रमों को शुरू किया गया है जैसे -- भाषांतर अनुभव, नारी चेतना आदि, जो काफ़ी पसंद किए गए हैं।

इसके बाद दीप प्रज्ज्वलित कर प्रदर्शनी का शुभारंभ किया गया। इस प्रदर्शनी में पिछले वर्ष के साहित्योत्सव के चित्रों के साथ

देशभर में कार्यक्रमों के आयोजित महत्त्वपूर्ण चित्रों को प्रदर्शित किया गया है। इसमें लगाई गई पुस्तक प्रदर्शनी में अकादेमी द्वारा प्रकाशित 24 भारतीय भाषाओं की पुस्तकें अवलोकन और बिक्री के लिए उपलब्ध हैं।

वर्ष 2014 के अकादेमी पुरस्कार से सम्मानित पुस्तकें भी दर्शकों के अवलोकनार्थ रखी गई हैं।

साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2014 की घोषणा

साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष श्री विश्वनाथ प्रसाद तिवारी की अध्यक्षता में रवीन्द्र भवन, नई दिल्ली में सोमवार, 9 मार्च 2015 को आयोजित अकादेमी के कार्यकारी मंडल की बैठक में 23 पुस्तकों को साहित्य अकादेमी अनुवाद पुरस्कार 2014 के लिए अनुमोदित किया गया। संताली भाषा में पुरस्कार बाद में घोषित किया जाएगा। पुस्तकों का चयन नियमानुसार गठित संबंधित भाषाओं की त्रिसदस्यीय निर्णायक समितियों की संस्तुतियों के आधार पर किया गया। पुरस्कार के रूप में 50,000/- रुपए की राशि और उत्कीर्ण ताम्र फलक इन पुस्तकों के अनुवादकों को एक विशेष समारोह में प्रदान किए जाएँगे। पुरस्कृत अनुवादक हैं -

असमिया-बिपुल देउरी, बाङ्ला-विनय कुमार माहाता, बोडो-सुरथ नार्ज़ारी, डोगरी-यशपाल 'निर्मल', अंग्रेज़ी-पद्मिनी राजप्पा, गुजराती-(स्व.) नगीन जी. शाह, हिंदी-फूलचंद मानव, कन्नड-जी.एन. रंगनाथन राव, कश्मीरी-मीम हे जफ़र, कोंकणी-पांडुरंग काशिनाथ गावडे, मैथिली-रामनारायण सिंह, मलयाळम्-प्रिया ए.एस., मणिपुरी-इबोतोम्बी 'मङ्गाङ्', मराठी-एस.एस. पाटिल, नेपाली-डी.एम. प्रधान, ओड़िया-रवीन्द्र कुमार प्रहराज, पंजाबी-तरसेम, राजस्थानी-कैलाश मंडेला, संस्कृत-नारायणप्रकाश, सिंधी-राम कुकरेजा, तमिळ-एस. देवादोस, उर्दू-वेद राही।

साहित्य अकादेमी भाषा सम्मान डॉ. जसपाल सिंह और श्री वसंत निर्गुणे को

डॉ. जसपाल सिंह

साहित्य अकादेमी के कालजयी एवं मध्यकालीन साहित्य के लिए दिए जाने वाले भाषा सम्मान के लिए डॉ. जसपाल सिंह के नाम की घोषणा की गई है। भीली भाषा को आगे बढ़ाने के लिए किए गए महत्त्वपूर्ण अवदान के लिए श्री वसंत निर्गुणे को यह पुरस्कार दिया जाएगा। भाषा सम्मान के लिए एक लाख रुपए की राशि और उत्कीर्ण ताम्र फलक दिया जाता है। ये पुरस्कार कुछ समय बाद साहित्य अकादेमी के अध्यक्ष द्वारा एक समारोह में प्रदान किए जाएँगे।

डॉ. जसपाल सिंह प्रख्यात विद्वान्, राजनयिक, अध्यापक और शिक्षाशास्त्री हैं। वर्तमान में वे पंजाब यूनिवर्सिटी, पटियाला के कुलपति हैं। श्री वसंत निर्गुणे भीली भाषा के प्रख्यात विद्वान् हैं। उन्होंने गोंड, भील, कुर्कू, बैगा, सहरिया आदि जनजातियों की संस्कृतियों के विभिन्न पक्षों पर महत्त्वपूर्ण काम किया है और जनजातीय कला पर पाँच वृत्तचित्रों का निर्माण किया है।

आगामी कार्यक्रम

11 मार्च 2015 : आमने-सामने : पुरस्कृत लेखकों से संवाद, मेघदूत रंगशाला III : पूर्वाह्न 10 बजे
युवा साहिती : युवा लेखक सम्मिलन : नई फ़सल, रवींद्र भवन परिसर : पूर्वाह्न 10.45 बजे
सांस्कृतिक कार्यक्रम : गीता चंद्रन द्वारा भरतनाट्यम नृत्य, मेघदूत मुक्ताकाश रंगशाला : सायं 6.30 बजे

12 मार्च 2015 :भारत की अलिखित भाषाएँ विषयक परिसंवाद, रवींद्र भवन परिसर : पूर्वाह्न 10.00 बजे
स्थापना दिवस व्याख्यान : प्रख्यात कन्नड लेखक एस.एल. भैरप्पा द्वारा, रवींद्र भवन परिसर : सायं 6.00 बजे

12-14 मार्च 2015 : 'भारतीय कथा साहित्य में क्षेत्र तथा राष्ट्र' विषयक **राष्ट्रीय संगोष्ठी**
साहित्य अकादेमी सभागार, प्रथम तल : पूर्वाह्न 10.00 बजे

13 मार्च 2015 : पूर्वोत्तरी : उत्तर पूर्व एवं उत्तर क्षेत्रीय लेखक सम्मिलन,
रवींद्र भवन परिसर : पूर्वाह्न 10.30 बजे
सांस्कृतिक कार्यक्रम : राजस्थानी लोक गायन, मेघदूत मुक्ताकाश रंगशाला : सायं 6.30 बजे

14 मार्च 2015 : बाल साहिती : आओ कहानी बुनें : बाल साहित्य से संबंधित दिन भर का कार्यक्रम,
रवींद्र भवन परिसर : पूर्वाह्न 10.30 बजे

रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग
नई दिल्ली-110001, दूरभाषः 011-23386626-28

DD NATIONAL Media Partner

पुस्तक प्रदर्शनी : प्रति दिन पूर्वाह्न 10 से सायं 7.00 बजे तक
रवींद्र भवन परिसर

वेबसाइट : www.sahitya-akademi.gov.in

साहित्य अकादेमी
रवींद्र भवन, 35 फ़ीरोज़शाह मार्ग, नई दिल्ली 110001
दूरभाष : +91 11 23386626-28, फ़ैक्स : +91 11 23382428
ई-मेल : secretary@sahitya-akademi.gov.in, वेबसाइट : http://www.sahitya-akademi.gov.in